

220 I

॥ ॐ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्री केमारी पूजा को आरंभ

[illegible]

दृशना॥ ॥ चयादसदध कवलमर्वस्यधादावधं कालिनामृद्यैर्ययाचक
 ॥ यथराठदीयाचक ॥ धनधूनदाकलसयूजायाय ॥ ययूजायूजायाय ॥
 सम्यनसयूजायाय ॥ ॥ धनवलिपूजायाय ॥ ॥ समसयूजायायधूनदा
 वज्रमधुयवर्न ॥ ॥ गनामृतिकाययाय ॥ कामय ॥ यगादुतिधूनदा
 व ॥ वृहादुतियाय ॥ ॥ यूजाधूनदावडासकलविहा
 विज्ञानदावधमजूर्ययाय ॥ दावमूनदवसकवर्नवलिदधुवियाय ॥ ॥
 तियाअलियाय ॥ ॥ धनयाय ॥ जायधु ॥ माहमाया ॥ गीसम्बना ॥ ॥

गुनयुतिसुग ॥ क्रययालसग ॥ यिवनधुगुतियाय ॥ ॥ वलिविय ॥ ॥
 नजडाडीह यूलचणुमदाक्रयालाय ४ योयीयूयायकालनाममहाठ न
 वायभूवरुनमधुलम ॥ धनभूवरुनश्चतुर्जु ॥ तिनरकायवदार्जव
 रुटकधनायनइदिठुशमूनश्चमूनश्चववश्चल ॥ लश्मराजमवाधियथ
 वलिगृह २ मराजग्यनिविद्यं कूरु २ रुटस्वाहा ॥ ॥ तियाअलियाय ॥ धन
 नयाय ॥ जायधु ॥ ॐ नमामहाठ नवाय ॥ गीसम्बना ॥ यस्यात्कं य ० नाद
 त्यादि ॥ ० ॥ गुरुगंधादि ॥ यजमानस्य धनधूदावदूर्गं दूधावाइ ध

शन ॥ वसुनि श्रुदधुन ॥ दबलह नर्थकानि स्थलभास्य इत्य ॥ ० ॥ धर्ममं ग
लामकयदय ॥ लामानदु गयनक ॥ धानसयुजायाय ॥ गुर्यनयाय ॥ ॥
ध्वगंधूनदावयपादवन ॥ यंचध्वनाहाय ॥ मासाद्रुगिविय ॥ ॥ ध्वगंधू
नदावकावनदसवलिविनवन ॥ ॥ विसर्जनयाय ॥ ॥ वलिष्काय ॥ ध्वगं
धूनदावध्वनावदसाभागविय ॥ ॥ देव ॥ कलस ॥ अग्नि ॥ सकलेश्व
स्वानगनक ॥ धर्मयुजायाचक ॥ दखनागयक देवसं ध्वगं ॥ दूज्याय
॥ ॥ अस्मादयदय ॥ ॥ ध्वगंधूनदावध्वनामयासकलगाद्दायावर्ल

सुसवाय ॥ ध्वगंध्वनामया ॥ ॥ वलिष्कायातकायावदध्वकवलसद
गुलियाय ॥ गिया ॥ अलियाय ॥ जायभुग ॥ धीसम्भगा ॥ अरुगन्धदियु
मानस्य ॥ स्वानवियावरुलिविगा कायकलेश्व ॥ ० ॥ विष्नागदावर्ध
चकलेश्व ॥ ध्वगंध्वनागदाव ॥ धर्ममं गलामकयदय ॥ धवधवध
ययययतिसुवन ॥ समानज ॥ अदिनयुजायाचक ॥ ॥ दूजायायध्वन
दाव धमयलियातिनदगुलियाय ॥ नगागुवसुमलन ॥ ॥ अस्वंगुमं
दलाकावति ॥ ॥ कनवकार्गन्यास ॥ ॥ अस्वंगुमं ॥ ॥ अस्वंगुमं

नथादृष्टं ॥ नमः ॥ वाँ ॥ गाउर्न धान ॥ नमः ॥ अं ॥ यथागच्छते ॥ अगच्छते ॥
गर्जवन्मानी वाद ॥ ॐ नमः ॥ अगच्छते ॥ अगच्छते ॥ नमः ॥ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ
यनीदवीनमः ॥ सयुक्ता ॥ अगच्छते ॥ नमः ॥ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ
वसं सारु ॥ नमः ॥ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ
यायवयद ॥ नमः ॥ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ
नमः ॥ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ
य ॥ वाँ ॥ ११ ॥ थानिसुदा ॥ सारु ॥ वक्रायनीहं समानुरा यथागच्छते

वासिनी ॥ सर्वसिद्धि कवीदवी ॥ धनी चैवनभासु ॥ अगच्छते ॥ २ ॥
गंगासाहं गवनीदवी यदु ॥ नमः ॥ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ
सारु ॥ अगच्छते ॥ धान ॥ मरुवृक्ष सनासीन ॥ स्वगवर्धु चरु रुकु ॥ गुला
कविन्दुसुदाच ॥ धान ॥ गवनीदवी नमास्यहं ॥ नमः ॥ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ
यादना ॥ नमः ॥ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ
माहं गवनीया ॥ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ
वीदवीश ॥ सयुक्ता ॥ अगच्छते ॥ नमः ॥ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३

[illegible][illegible]

दाथानी ॥ आरु ॥ महाका कूटमात्रा कालकृतिवासिनी ॥ सर्व सि
द्धि कवीश्वरी कामाचनमासुर्ग ॥ अगुर्गंधादि ॥ ७ ॥ गंगावकुवीयुजा ॥
तुं मङ्गागाकासायनमः ॥ तुं वं वं वं वं आगच्छ २ स्वाहा ॥ आवाहन ॥ ध्यान ॥
महागाकूमात्रा रुविगवतुचतुर्ज ॥ विन्दु कायालसूदतु सखि वकु कला
यनी ॥ तुं वं ४ असायहृद ॥ अर्थादकनथाकन ॥ तुं वं गणनं ॥ तुं ७ ट
७ गी अट्टहासकु गुरवटकी गूढठवर्ग वं वं वं वं वा ॥ तुं ७ वं का धडे नवा यर
॥ तुं ७ वा वी वं वं ॥ गी वं वं वं २ ॥ संयुक्ता जलि आ तुं ७ वं दद यायनमः ॥

तुं ७ वं निवसं स्वाहा ॥ तुं ७ वं निखाय वायट ॥ तुं ७ वं कवचायट ॥ तुं ७ वं न
गुयाय वयट ॥ तुं ७ वं ४ असायहृद ॥ आवाहन युध धृयदीययुजा ॥ तुं ७
अयनाजिगाथेश ॥ तुं ७ कालनिमः ॥ तुं ७ ट वं वं वं वं वलि गूढ २ स्वाहा ॥ जाय ॥
वृ ॥ ११ ॥ आनिमूदा ॥ आरु ॥ वं नगक समासाय इवमर्कट सनिहीनिला
वृ कवायिनीश्वरी नावायनीनमासुर्ग ॥ अगुर्गंधादि ॥ ७ ॥ गंगा मध्यरीक
किनी ॥ तुं ७ यद्वासायनमः ॥ तुं ७ सिंहासाय २ ॥ असा ॥ तुं ७ वं गी वृ डि
क अगाच्छ २ स्वाहा ॥ आवाहन ॥ ध्यान ॥ नीलात्यलदवस्था ॥ मावीन

रुसमसमयरा॥ धनमगगक॥

॥ अष्टवक्रमहाभ

जागीनयद्यसमयुक्तं। दंष्ट्रकटमहाकायतीमायुविद्वगानन॥ विंगद
दुल्लितगम्भद्वामुच्छर्गधविर्ण। द्वामुखयानयागमर्थयनमिनाध
व॥ अंसिगामनयागश्चविरुत्तुमनुमानर्ण। कीमुक्तचारुमालश्चकार्य
रुल्लालियुनिर्ण॥ मलायल्लसूर्यश्चवाचनदकि॥ कव। खट्कथैवय
दार्गमंदगयद्विगधन॥ यूरुर्कनागयागश्चसागवयुथिवीसह। कलिक
मलरामश्चवामयालीविनाजन॥ सर्वदुल्लल्लवर्कनागयश्यायवी

तिर्ण। चूणमालागल्लवक्षयावन्त्यादावल्लविनी॥ थगतयद्रासनसुश्चम
दिवानन्दननिर्ण। नुर्वक्षान्तावविधिवगमुत्वाचविधियुर्वर्क॥ अष्टवक्रम
नुदवस्यवर्णनकेसू॥ गतिर्ण॥ वृंभानसू॥ टिकारासंगदइमिमुखासुर्ण
॥ दकि॥ यद्यवर्णुश्चमेधनीलात्यैल्लदुर्ण॥ यीगमूरुववकुनुकिश्चिदुद
विगमिष्यग॥ गदइसुचवर्कयूवयवालसीनिर्ण॥ दकि॥ कववर्णुनेय
थिमसिगयद्रवग॥ यकमूरुववकुनुचकुविगगिलाचना॥ दयसयविव
काष्कलयाद्रासमिष्यग॥ नवाभासगगधवीमकवकुगिलावनी॥

पीत काम करुणि पीगुहयवर्गचामुखायाद् ॥ नै ७ लीकुरुववाय
 नमः ॥ नै ७ चोचोचुचु ॥ पीवामुखद्वीनम ॥ सैयुजाजलि ॥ नै ७ वा
 हृदयायनमः ॥ नै ७ चोचिलभसारा ॥ नै ७ चोचिलखायवायट ॥ नै ७
 वैकववायट ॥ नै ७ चोचिलभसारा ॥ नै ७ चोचिलखायवायट ॥ नै ७
 आवाहनयुजाधुयदीय ॥ नै ७ माहनीनेमः ॥ नै ७ वलसमथनी ॥
 नै ७ यंचामुखीवलिगृह २०० ॥ काया ॥ चो ॥ २० ॥ यानिमूडा ॥ ॥ ॥

चामुखायानकाच नवककालहृषणी ॥ सर्वसिद्धिकरीद्वीचर्चि
 कायनभासुग ॥ अगुगंधुदी ॥ २ ॥ ॥ गतामहालक्ष्मीयुजा ॥ नै ७ महा
 सिंहासनायनमः ॥ नै ७ ममहालक्ष्मीआगकुरुस्वाहा ॥ आवाहन ॥ ॥
 ध्यान ॥ नै ७ महासिंहासनाद्वीकुरुमनुष्यविग्रहा ॥ गूलाकविन्दुमूडा
 च ॥ ध्यान ॥ नै ७ ममहालक्ष्मीनमः ॥ नै ७ ममहालक्ष्मीयुजा ॥ अथदिक्कनयाक
 र्ण ॥ नै ७ ममहालक्ष्मीनमः ॥ नै ७ ममहालक्ष्मीयुजा ॥ अथदिक्कनयाक

हालकी याद ॥ नं० मां मूं मूं मूं शी महालक्ष्मी देवी ॥ सैयू झाऊ
लि ३ ॥ नं० मां हृदयाय शान्ति ॥ नं० मां गिरि सखा ॥ नं० मां गिरिवाय वाय
ठ ॥ नं० मां कंववाय दू ॥ नं० मां नगर याय वयद ॥ नं० मां ४ नृकाय
रुठ ॥ आवाहन युध्य धूर्य दीयू ॥ नं० आ कर्वणी २ ॥ नं० सर्वरू
ग देमनी २ ॥ नं० मां महालक्ष्मी वलि गृह २ स्वाहा ॥ जाय ॥ मूं १० ॥ था
निमूदा ॥ साग ॥ लक्ष्मी घनी निविद्या ॥ लक्ष्मी मलना स ३ ॥ नी ॥ गिला

कवन्दनी देवी विः श्वश्वनी नभा सुग ॥ अरुगन्धधियुर्वत ॥ १० ॥ ॥
नगाडु देव गणयति युजा ॥ नं० महामूसा सायनम ४ ॥ आसा ॥ नं० गभगन
वतय आगच्छ २ स्वाहा ॥ आवाहन ॥ ध्यान ॥ गजवकु गन ॥ यु ४ स्वगव
लुचरु रुड ॥ मूललरु रुड ॥ व के धायन वगन श्वनी ॥ नं० गुगलु द
य अकाय रुड ॥ अथा देवन था ॥ नं० मां गानन ॥ नं० मां गी गूं गूं
गन श्ववाय याद ॥ सैयू झाऊ लि ३ ॥ नं० मां हृदयाय शान्ति ॥ नं० मां गि

वभस्वाहा॥ त्रै० गूं गिखाथवा मट॥ त्रै० गं कवचाय हूं॥ त्रै० गं नमः
याय २॥ त्रै० गं ४ अस्माय रुट॥ आवाहनादि यूस्य धूय दीय वृज॥ त्रै०
गं गनय अवलि गृह्ण २ स्वाहा॥ जाय॥ गूं २॥ गं ५ मूडा॥ साग॥ गं ५
वदनमहात्मा स र्यज॥ गूं यवीनं पृथुं गवजं घनांशुं रुकुलं रुध्रं
मूर्ध्नि कवधूं गजयमालमूललशूकं भवद्वरु विष्टि वृन्दसुसक
स्वा गं ८ गं॥ गूं गं धादि॥ ११॥ गंगाजुष्टं वरु क वृज॥ त्रै० महा

मयूना सनायनम ४॥ त्रै० वं वट कृनाथाय गं २ स्वाहा॥ आ
वाहन॥ ध्यान॥ मयूना सनमा वृता गं किं रुक्मा महावल॥ वक व
रुं महा गं ५ वट कायनमा म्हा॥ त्रै० वं ४ वरु कायजु साय रुट
॥ गूं धां क कनथा कन॥ त्रै० वूं॥ गं नु गं॥ त्रै० वां वी वूंशी वट कूं
नाथाय द्वाद॥ सयूका जलि वूं २॥ त्रै० हृदयाय नमः॥ त्रै० वूं
गि वभस्वाहा॥ त्रै० वूं गि माथवा मट॥ त्रै० वं कवचाय हूं॥ त्रै०

वैं नगुयायववट॥ नैं ७ वैं १७ अकारुटा॥ आवाहनदियव्य भूय
दीययूजा॥ नैं ७ वैं वट्ट कायवलिगुट्ट २ स्वाहा॥ आया॥ वू॥ २०॥ गऊ
निमूडा॥ साग॥ क न कलिग कयाल कुलीद गुया वू॥ नि निमिन
गन हनील बालक गय वीग॥ कर्म समय मय आदि द्रविष्ट दद
कुऊ यगिच गक नाथ सिद्धि दे ग द कार्ता॥ अगुगं धादि॥ १२॥ गगा क
गयाल यूजा॥ नैं ७ मद्राथ गामनायश॥ आसा॥ नैं ७ कौं कौं गयालायशा

२
गङ्ग २ स्वाहा॥ आवाहन॥ ध्यान॥ नीलजीमूर्त्त संकास एकवक्त्र विला
चर्न॥ विष्णु विष्णु कंग अखरुट्ट क धान ली॥ उमत्रयदददस अ वि
द्रुक यालमूदिगं थगावूर मद्राध व ध्यायन कगयालकी॥ नैं ७ कु ४ अ
स्वायरुट्ट॥ अथोदक नथाक ली॥ नैं ७ वू॥ गगन॥ नैं ७ कौं कौं कृ ४
कगयालायुश॥ संधूआजालि॥ नैं ७ कौं वू॥ ददयायश॥ नैं ७ कौं शिन
स स्वाहा॥ नैं ७ दू गि स्वायवायट्ट॥ नैं ७ कौं कवचायडू॥ नैं ७ कौं न

गगयायववट ॥ नं ७ क ४ ब्रसायवट ॥ आवाहनादिबूय धूय
 दीवयूजा ॥ नं ७ क ४ गगयालायवलि मृदू २ सादा ॥ जाय ४ ॥
 २१ ॥ विष्टुलमुडा ॥ साग ॥ नं निर्वोर्न नि ॥ गूग ४ ॥
 गगाकागुलिका ॥ ध ४ वदक वृजा ॥ नं ७ मयूनासाय २ ॥ नं ७ व
 वदकायगूगक २ सादा ॥ आवाहन ॥ धान ॥ द ७ रु रु क मा नाय
 नक व ७ सुगडस ॥ बालज ॥ गायवीग ७ मदा विष्टि यमदेक ॥

नं० वं० अ० य० रु० ॥ अ० र्था० क० न० था० रु० ॥ नं० वं० गा० उ० न० ॥ नं० वं०
वी० वं० धी० व० रु० का० य० दा० ॥ स० य० अ० उ० लि० अ० वा० रु० ॥ द० या० य० न० म० ॥ नं० वं०
वी० गि० न० म० स्वा० ॥ नं० वं० गि० खा० य० वा० य० रु० ॥ नं० वं० न० उ० य० य० व० म० रु० ॥
नं० वं० अ० अ० य० रु० ॥ अ० वा० रु० ना० दि० य० य० धू० य० दी० य० व० रु० ॥ नं० वं० वं०
रु० का० य० व० लि० गृ० रु० २० स्वा० ॥ जा० य० ॥ वृ० १० ॥ ग० रु० नी० मू० रु० ॥ अ० रु० ॥ य० रु०
व० रु० म० रु० ग० रु० रु० रु० रु० म० रु० व० ॥ ला० उ० टि० ल० ना० ग० वी० ग० अ० व० रु० ना०

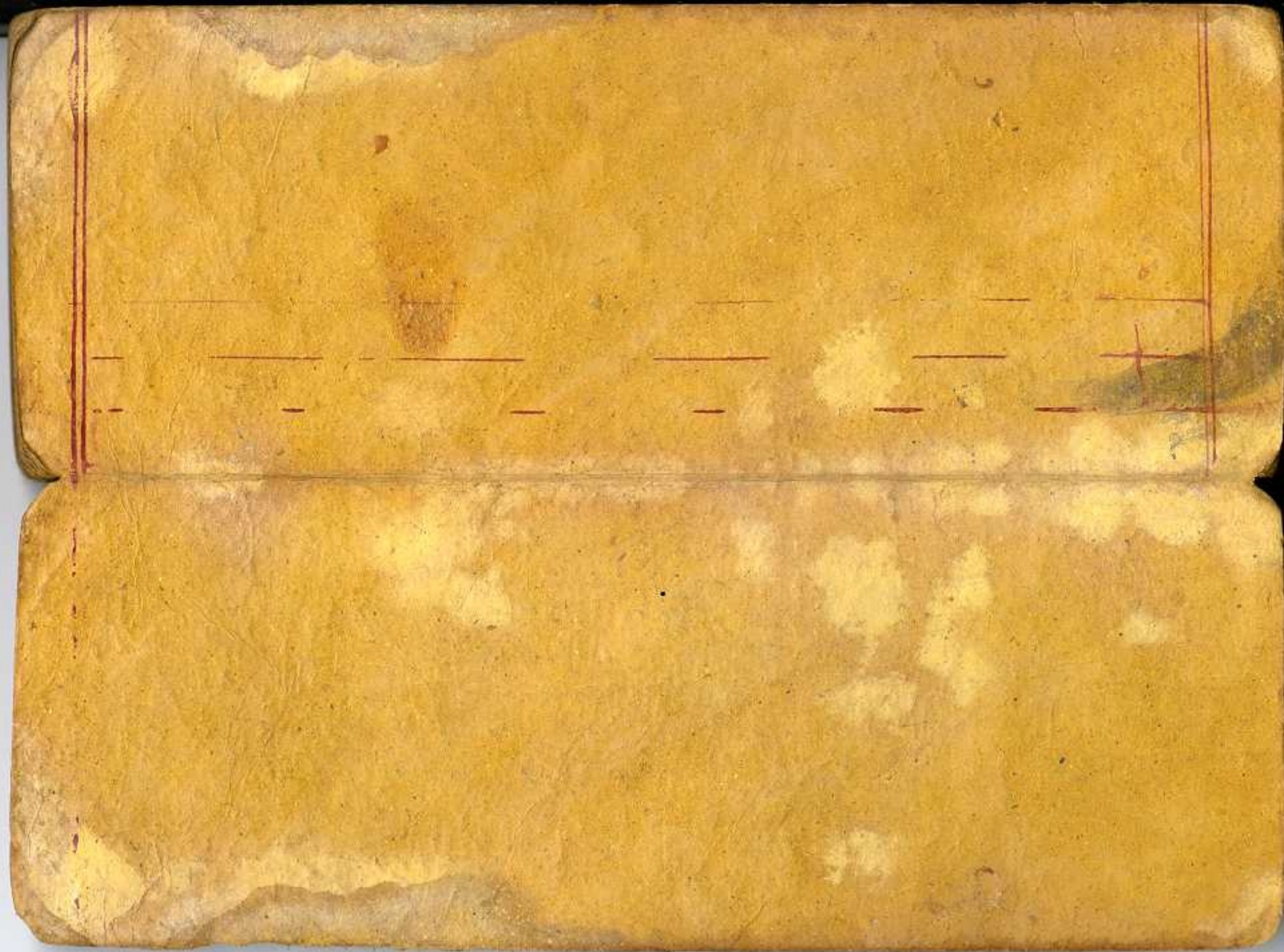
धनभास्तु न ॥ गुरुगंधादि ॥ २७ ॥ ॥ धर्मद्वयलियातीनुदुलिया
 यधूनदाव निहावयाव जागिनीवलिसा जावयाय ॥ मृग ॥ यज
 मानग्रादिन खानगनकल ॥ भागयाय ॥ शीसम्बगात्या ॥ दि ॥ ऊय
 बुक्रायनित्यादि ॥ ॥ यजमानस्य कामाजी जागनिमीत्यर्थं गुरुग
 धादि ॥ ० ॥ धर्मधूनदावयूजाकादुसालावयतिलिनाय कलहिचक ॥
 नदियधूनदाव ॥ खजववसगसी यागजवनजानकीन ॥ गगायद

य ॥ ॥ नैसाधालादिक्रि ॥ नहिगवनीसं गम्यकामानल सृच्छालान
 मिथार्द्धरागमद्विद्विद्वलिगंगया ॥ यानकामृगयानभवजवग ॥ यद
 कमार्यकया गामृगमृनालगुरुसदृशी गकि ॥ गिवायाकव ॥ ॥ धम
 ब्रुययागनविन्दुवियाव ॥ भायकालनय ॥ ॥ भायलदावभागयाय
 ॥ ॥ मालनि ॥ मारामाया ॥ ऊयवक्रायनि ॥ धर्मयदय ॥ ॥ यजमान
 स्य गुरुक नाम ॥ कामाजी जागनिमित्यर्थं गुरुगंधादि ॥ ॥ भायमानदा

वसमयन॥ भावायक॥ वयर्थदावकलंकदावक॥ ॥ थं कालिस्य
भाकासिदिनासूयक॥ म॥ ध॥ च॥ यिदि॥ ध॥ ल॥ ग॥ म॥ ध॥ भावक॥ ॥ यंचरु
छिद्राया॥ ॥ रुनिवाखवनजानक॥ मृगजवनजानक॥ ध॥ खनारु
निवासर्थनक॥ थं॥ दि॥ लि॥ दू॥ व॥ न॥ स्य॥ का॥ दि॥ मि॥ वि॥ व॥ न॥ स्य॥ वि॥ श्रा॥ च॥ क॥
॥ क॥ ल॥ क॥ वा॥ च॥ क॥ ॥ थ॥ छि॥ लि॥ वा॥ च॥ वा॥ ध॥ ख॥ वा॥ यि॥ व॥ न॥ ॥ क॥ दि॥ लि॥ वा॥
य॥ द॥ व॥ न॥ ग॥ ल॥ ॥ ॥ दू॥ जा॥ जाल॥ ख॥ स॥ वा॥ य॥ ॥ थ॥ म॥ द॥ गु॥ लि॥ या॥ दा॥ जा॥ दू॥

वनमूलदवसद्वनन॥ ॥ थ॥ न॥ ध॥ न॥ दा॥ व॥ स्व॥ मि॥ क॥ वा॥ या॥ व॥ ॥ थं॥ का॥
लि॥ यं॥ वा॥ वा॥ क॥ न॥ य॥ मा॥ ख॥ न॥ ॥ स॥ क॥ लं॥ अ॥ वि॥ स्य॥ क॥ वि॥ य॥ ॥ ॥ आ॥ च्छ॥ स॥ वि॥
य॥ ॥ वा॥ ल॥ स॥ च्छ॥ उ॥ द्रा॥ य॥ ॥ आ॥ न॥ ठि॥ क॥ न॥ ॥ क॥ लं॥ स॥ दू॥ वा॥ ल्या॥ ख॥ स॥ ग्य॥ न॥ थं॥
का॥ लि॥ त्वं॥ द्रा॥ य॥ ॥ सि॥ ध॥ मू॥ द॥ द्रा॥ य॥ ॥ क॥ मा॥ वि॥ स्य॥ ख॥ स॥ म॥ य॥ ॥ ॥ छू॥ नि॥
का॥ मा॥ नि॥ दू॥ जा॥ वि॥ वि॥ स॥ मा॥ य॥ ॥ छू॥ रं॥ ॥ ॥ म॥ च्छ॥ न॥ ॥ १२॥ वे॥ सा॥ य॥ क॥ दू॥ ॥
शी॥ ति॥ व॥ द॥ वि॥ द॥ व॥ स्वा॥ र्थ॥ ॥ १४॥ लि॥ वि॥ नं॥ ॥ स॥ य॥ र्थ॥ स॥ मा॥ य॥ ॥ छू॥ रं॥ ॥ ७ ॥





ASIA ARCHIVES

I

2078

STAMPED

मन्त्रार्थसन्तुवालशक्तुल्लवैश्वानलादिदिग्देवगासूचीगावमदारुव
कुगुवृ(मावाक)दाम्यः॥३॥रुवन्तुगोडाधर्मविजयीरुवन्तुयजाम्
स्वीनसन्तुदगगुआदेथानुअस्मादादीनायडमानानासिकुडस्वदि
नाग्रायूवाग्राग्यनष्टयैकनधनलक्ष्मीसन्तुगिसन्तानवृद्धि
सुद्विद्यदचरुस्यदम्यः॥३॥रुवन्तुसर्वसत्त्वासुखिनसन्तु
यैकन्यः॥कालवर्षिरुवन्तुसर्वविधियवियूक्तुमन्तु॥
मृगवधायस्ययादायइनयनमदः॥सामवधाः॥धरुसुनकाथ

द्वे द्वितीये गगयवदुर्नवाहर्नवम् धार्यं । गगयरीयस्य गगर्नय
 नमूयनिषक्कागमयेवदस्वा विष्णुसचक्रनमूर्तिरुवदयुगिवद
 नयः नूयवीवनाह ॥ १ ॥ नकागुक्का निष्कृष्ण गियथगनियुगार्मी
 निदव्यागिमाग ल्वीमुत्वाथयलदा विवृधयदगगा श्री निवेग्म
 यसिद्धा । नात्रयावानवृद्धारुवगिसवगगो गि निक्कालयवाध ॥ २ ॥ अ
 दामागामुगर्कजयकुयययदा निरयनूया गिवाग्मी ॥ २ ॥ अ
 थथयः नूयसीकादिगिविदिगिगिवासीरिगाधवगाया क

लुवावकिम (ध्व) कलसयनिगगामगुलसुं गिलवा । न सर्वसनुदवा
 जूरिमगरुलदामनुसंगीयनूया मृदामनादीहीनायजन
 यविविधीकीनदायाक्रमस्व ॥ ३ ॥ अक्रन्याश्वचनत्वं नग निधि
 गुटिकायादकाकृचनत्वं यागालादिवा सिद्धि गिरुवग सहि
 गादिवाचिनामलिप्य । सिद्धिर्दिवायधीनायनयून विसनागानु
 उमनुवादं चगद्यस्यदसादासरुवठुरुवगाममिदवायम

न॥७॥ ॐ न्दाद्यालोकयालास्वसदिगवसिनास्वस्वमूदास्वयूका
आदित्यादिग्रहभवसगिरुविमदाजनमदेवास्वयूका। गृकाया
गभस्वगिष्ठागणगुनवठुक४सुंठिलीमागृकाच सिद्धि। यथा
ददाठुरुवठुवसुमनीयद्रुयूळु॥८॥ अथवाउ
कनागभयठगणसकलाठुगवकेयिगभाच। अथवाअथमासा
लिथिगणसकलाअचनरुगथाग। अलभाक॥९॥ विलागूक

चठनययगभवर्लुसूगीवचन्द्रासूयीगंसनुनिर्यनिनूजम
स्वयुदंसनुननाडलकी॥१०॥ कालवधनुभद्राकिगिनेवि
चसदागसूयूळुसूठुगावद॥११॥ सनुविया४सकलनृय
तिडाध्वसुवेनियजाथ। सत्वानुयालभचयठुवठुसूठुगा
कावागभसार्थयूका निशासादयसाधनिवसठुसगनसु
यजायूळुग॥१२॥ यावहारास्वनस्ययठुवठुवठुवगाया

[illegible]

न्यायाश्चमानासुनवननिगायावुव४सर्वधवा॥२॥न्यसुभ्रक
 लुसाधमनलयेणवयंवद्रिक॥७॥अथायागर्काधनादियू
 वेददयययुगयं॥८॥किंसागकर्मः॥९॥जायुकाचर्वदी
 दिगयगिसर्गलिरेनवंचादुडंगं॥१०॥आनिन्याष्टसकृगंवद्रक
 गणयगियागुमांजानवदी॥११॥वायादृद्धाथवद्रिकवकु
 सुमनिहाकादयश्चकुकिविन्दुदीकार्गयिर्गवर्गशूजननुवि

उत्पद्यिगभुक्तद्वनीग। नरुथाईभूननीयूनरुउगद्वयविन्दु
मूलीगभुयि डिक्कासय अकालियलवशावशादयाद नरु
समृद्धी॥११॥ दद्यागद्वयवकुचवकरवकलधवदवक (९७
कनक दवर्धथायनिरुं यमुदिगवदनीम (नथवीविचिन्
। संसि त्वावु ७ म (धकमलविकसिर्गमध्वयक वृसंरु मा
धवीकुकि नूवीवद्व विधिरुलदा यारुमां भूयि १११ कि ११२ ॥

दवामगाद्वीनायूनमयिचयटे १ यल्लवे १ कुरु मृत्ति (११
क्रीनेसीथगाथे १ कुरु ममरुलसुर्ग (धोयधाविहिलने १११
थेधुगाक गाथे मेलयगलून सदेष्टि सिद्धनद्वी यथेने
वद्यधूथे १ स्वकूलविधिवक गन्नमयुर्कु कुरु ॥१३॥ कुरु
॥ ॥ मध्वयकम (धसि गयनमशिर्वगकि युर्क कुरु
गं सद्येत्मानं निजात्मानमिगु नूगनरुनगम्ययसिद्धि। द

वीरं देवकलीनं कलम कलमयं यागिना यागसंस्कृतं सर्वज्ञं
सर्वशर्वं सकलसुखकर्मभीमिहं दृष्टवन्तान् ॥ १७ ॥ इति
मण्डलं ॥ ॥ वाङ्मयं सासनं स्थावयन्तान् गंगाशुभं कि
मशुभं किमावीर्यं सैव गन्तव्यं गन्तव्यं वीर्यं सिद्धिं
॥ वाङ्मयं सैव गन्तव्यं गन्तव्यं वीर्यं सिद्धिं
चामुखं यमसैव गन्तव्यं गन्तव्यं वीर्यं सिद्धिं ॥ १८ ॥

वाङ्मायादि॥ ॥ वलि॥ गणयनि॥ सकलरु॥ ॥ श्रीसुम्बर्क॥
 माहार्मयावधति॥ ॥ गभवनीलयदास्यचि विद्यास्वाचार्यस्य
 किंन॥ या०॥ दास्यिलाद्यावसयाद्यावृथिवीगथा॥ यदिदावास्मि यङ्ग
 स्येष्टाचार्यस्यवि० गयन॥ मन्त्रमुद्राविहीनम॥ मन्त्रय० नक्षत्रयन
 ॥ माणकनादिहीनत्वा ददवन्नीयवि० गयन॥ शुचिगीलादिरु०
 ॥ यजनय० नवकर्मसु॥ वदमन्त्रय० शुद्धन क्रियाहीननदहि

ना। ककुमदि सितसर्व कर्षेनु गिवर्मंगल ॥ ॥ सन ४ सनु
निर्वगचसूनुना विक्षसुयाथादया वाजान ४ यनि यालयनुव
सुधा धम्मसिनासर्वदा। कालसंगनिवविभाजलसूच ४ संनुय
जायुअदा। भादगायनवृद्धिवा धवसूद ज्ञाष्टियभादासदा॥
भूनानाज्ञानगावा विजन्मयाभाहिनकर्णे। ककुमदसिमदव

दुमायुमरुताम्यरा॥ गिवमकु सर्वजगतां यणीगांथावयुंगलरु
। थायायेयानि सानेगसर्वगजवसूखीरुव ॥ ॥ ॥ ॥
उं नम ४ थलिकाथि॥ नभाहसुगमकाद्र (मेच) लिकाचुलु वि
कुमा। विष्णुध्वनीजगद्यागीमि निसंरुानकावणी॥ सर्वसिद्धि
कैथवी जयतूयावगाविणी। दुर्जयाविडिर्नरुदमहावेवि
विनागणी॥ ल्वशीचैवत्वमध्वनील्वधवीजननीयना। यक
वि२

गित्वं गुणमयी मूर्तिगुणस्वरूपिणी ॥ ॐ कारं च लया देवी
ह्रीं कारं यममात्मनी ॥ ह्रीं कारं च उकारं विन्दुसंयुतं ॥ इत्ये
दं यदिदं च यदि वीर्यनामसाक्षरं ॥ उगच लीयं देवकाका
मोहार्कचसूत्रं श्वरी ॥ ॐ मवर्णं विनगाच दशम्या रुद्रध
विणी ॥ ग्राहीरा रुवि सल्लिन्नामहीया सूत्रयातनी ॥ गित्वं
नार्दनि सृष्ट्य गूले हृदि नियागिभ ॥ महाये नि विनाशनी म

हावाक्षः श्रुका विणी ॥ वाजसुदहदित्यस्य उगच ॥ ॐ विनाय
संभवणीमर्दं निखायांच ॥ चं मांच कवचं गित्वं ॥ ह्रीं कारं च
गुरुदं मूरुटमनात्तु नुग्रसकं ॥ नमः ॥ स्वाहा यो यो ह्रीं च
वमटं श्रुदासकं ॥ २॥ यो गतमनूयका श्रुगुयूवनेन
श्वरी ॥ दार्णिशं कामरु विद्या यूजा दुर्गा च न श्वरी ॥ १०॥ ह्रीं कारं
गर्जितं नार्द रुयस्या विरुयं कर्तुं ॥ गिला कयूजनी देवी युष्म

धृयाग्निगर्धन रुवि यून्यादिहिर्यका दूजनीथा यरानके ४। गन
कालमहा दूजा महा दूजा धिवासिनी ॥ नवमी हाग दूजा च द
गं म्यां येव चालथ ॥ विवि सर्व विना साय ऊचयू यावगा विणी
गिसंधी चय ॥ १० ॥ निरु न क विरु समा हिग ४। गगमावरु थय सु
मूचगं सर्वयाग के ४॥ महा संगम ऊचनी विरु दलनान
नी ॥ स्वदूर्ध्व वरुणी दवी महा लक्ष्मी वगावणी ॥ दूष्टिगा वो महा

थागं महावागचन ॥ कथा महावैवर्ण्यमग्न न वा महादावा
मिकं दूचा वणी वाऊ कुल दूगं विवाध सऊयी रु वं ॥ समन
ली विनी दवी मूचगं सर्वयाग के ४॥ चळु दूक गण वरु नूद
चळु दूका दिहि ४॥ महा दूष्टि वी म ॥ दूष्टि वणी नमा सुगं
॥ १४ ॥ ॥ निरु चळु मना दू सुगि ॥ ४ ॥ समार्क ॥ नंदी शी ॥ १४ ॥

ॐ नमः शीकोमावीदधेनमः॥ शीको नवाच॥ नमः शीको नमः॥ नमः शीको नमः॥
हालोमीवीनकाही नकवासिनी॥ यागव्रीलिनी नूयाच मध्वध्व
वनीमृता॥ संध्यायावृद्ध नूयाच उगवायिनमः॥ काल
नागीत्वमवासी विष्णुमायात्वमवहि॥ त्वमवदविमुकति वि
ध्ववायविमाहिता॥ सर्वगवायिनीधवी यनायननिवासिनी
॥ उगत्मागधवीधवी सुखित्यनकाविणी॥ वज्रमाथध्वनी

वीहि नमः यनमध्वनी॥ नमः यनमकल्याणी मङ्गलायनमा
मुग॥ चविकायनमः॥ नमः शीको नमः॥ दिव्यमानन॥ विष्णुध्वनिम
हामाय नमः॥ लाकयावनी सर्वस्व नूयिणीमाने सर्वव्यापि
ध्वनिनी॥ यद्वनिर्वगुणमयी मृत्तिगयस्व नूयिणी॥ दूकान
गसिनीत्वदीकावसर्वमाहिनी॥ शीको नवाचलश्रीच

नकायगदवादि का॥ चतुर्धुजाचतुर्धुका चतुर्धुदस्यतू वि
का॥ ८॥ कालनागी कनाली च उगसी हानका विणी॥ उगत्तु
ष्टिक विष्टवी उं कानाथ यतू विणी॥ ९॥ कालिनी यनमादवी
गमनयदमायिना॥ अकायस्ति विष्टया च सत्यतू यावदवस्ति
ना॥ १०॥

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शीतला देव्यै नमः ॥ अथ शीतलाष्ट
कम् ॥ ॥ ॐ अस्य श्री शीतला स्तोत्रस्य महादेवकृपितः
अनुष्टुप् छंदः ॥ शीतला देवता । तक्ष्मी वर्जिम् । भवानी
शक्तिः । सर्वविस्फोटक निवृत्तये न पे विनियोगः
॥ ईश्वर उवाच ॥ वन्दे हं शीतलां देवीं रासभस्थीं

दिगं वरुणम् ॥ सार्जनी कलशो वेतां शूर्पाक्षं कृतम्
स्तकाम् ॥ १ ॥ वन्दे हं शीतलां देवीं सर्वलोकगमयाप
हाम् ॥ यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटक भयं मह
त् ॥ २ ॥ शीतले शीतले चेतियो ब्रूयाद्वाहपीडि
तः ॥ विस्फोटक भयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति ॥

३॥ यस्तु पुदकमध्ये तु ध्यात्वा पूजयते नरः ॥ विसृ
प्तोऽकम्भयं द्यौरंगुहेतस्य न जायते ॥ ४ ॥ शीतले
ज्वरदग्धस्य पूतिगंधयुतस्य च ॥ पुनश्च शुषः
पुंसस्त्वा माहुर्जीवनीषधम् ॥ ५ ॥ शीतले तनुजा
नुरोगान्तरुणं हरसि दुस्त्यजान् ॥ विस्फोटकवि
जीर्णानां त्वमेकाऽमृतवर्षिणी ॥ ६ ॥ गलगंडु

गहाले गगये चान्येदाहृणन्तुणम् ॥ तदनुध्या
नमात्रेण शीतले यांति संशयम् ॥ ७ ॥ नमंत्रं
नोषतंतस्य पापरोगस्य विद्यते ॥ त्वामेकां शी
तले धात्रीं न्यामि देवताम् ॥ ८ ॥ मृणाल
तंतुसदृशीनां मिह नमधसंस्थिताम् ॥ यस्त्वां स

चिं ~~तये~~ देवितस्य मृत्युर्न जायते ॥ ८ ॥ अथ
कं शीतला देव्या योनरः प्रपठेत्सदा ॥ विष्णो
रुक्मभयं घोरं गृहेतस्य न जायते ॥ ९० ॥ श्रोतव्यं
पठितव्यं च श्रद्धा भक्ति समन्वितैः ॥ उपसर्गवि
नाशाय परं स्वस्त्ययनं महत् ॥ ९१ ॥ शीतलोत्वं

जगन्माता शीतलोत्वं जगत्पिता ॥ शीतलोत्वं ज
गद्वात्री शीतला ये न मो नमः ॥ ९२ ॥ एस भो
गर्दभश्चैव खरो वेशा खनंदनः ॥ शीतला वा
हनश्चैव दूर्वा कंदनिकंतनः ॥ ९३ ॥ एतानि ख
रनामानि शीतलायै तु यः पठेत् ॥ तस्य जेहेशि

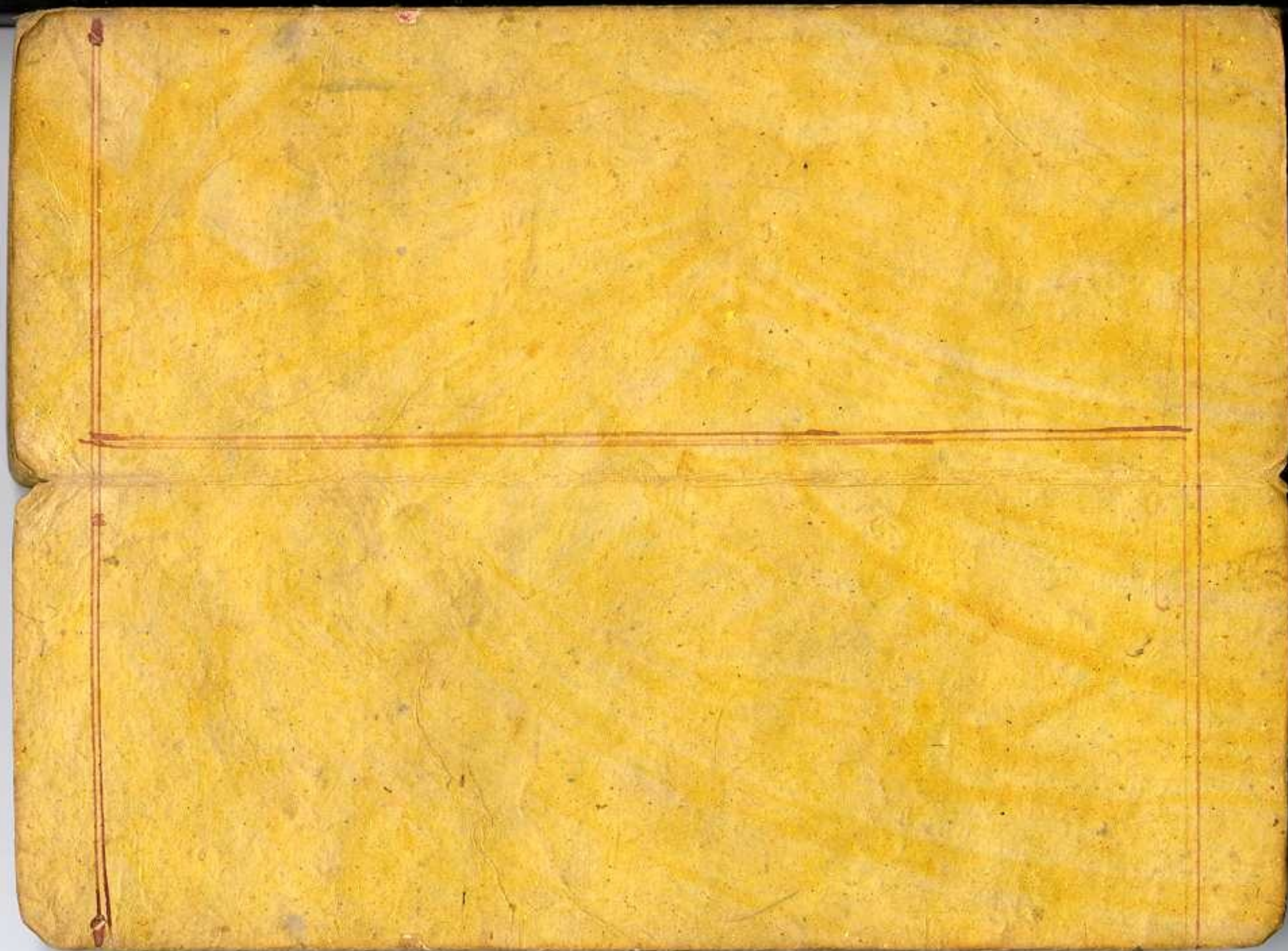
शी
शूनांचूतलाहूजूनजायते ॥ १४ ॥ शीतलाष्टक
मेवेदंनदेयूंस्थकस्यचित् ॥ दातव्यंचसदात
स्मे श्रद्धाभक्तियुतायवे ॥ १५ ॥ इति श्रीस्कन्द
पुराणे शीतलाष्टक स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ ॥
२०१० कार्तिक कृष्ण १४ गुरेष्टु लिखित गिरिजातटशर्मणा











२२० I

॥ ॐ ॥

॥ ॐ नमो भगवते ॥

॥ ॐ नमो भगवते ॥

॥ ॐ नमो भगवते ॥